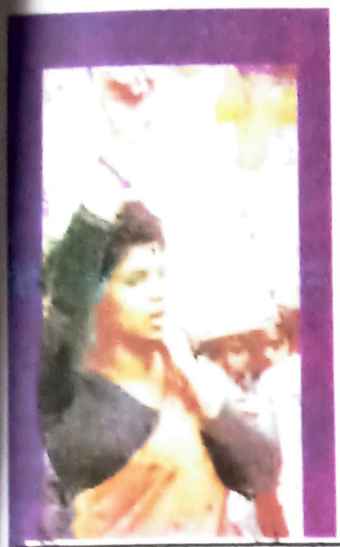

अध्याय 5

# समानता के लिए महिला संघर्ष

## कौन क्या काम करता है?

निम्नलिखित काम करने वालों के चित्र बनाइए :–

खेती का काम,
पढ़ाने-लिखाने का काम,
अस्पताल में मरीज़ों की देखभाल,
दुकान चलाना
वैज्ञानिक
ईंट भट्ठे पर काम करना

अपनी कक्षा द्वारा बनाये गये चित्रों को देखकर गिनें एवं अलग-अलग लोगों की संख्या दी गई तालिका में दर्शाएँ।

(शिक्षक द्वारा ब्लैक बोर्ड पर तालिका बनायी जाए।)

| काम | पुरुष | महिला |
|---|---|---|
| खेती का काम | | |
| पढाने-लिखाने का काम | | |
| अस्पताल में मरीजो की देखभाल | | |
| वैज्ञानिक | | |
| दुकान चलाना | | |
| ईंट भट्ठे पर काम करना | | |
| **कुल** | | |

1. तालिका देखकर बताएँ कि किन कामों के लिए महिलाओं के चित्र ज़्यादा संख्या में है और किन कामों के लिए पुरुषों के।
2. ऊपर दिए गए कामों के अलावा ऐसे कौन से काम हैं, जो महिलाएँ पुरुषों की तुलना में ज़्यादा करती हैं और कौन से काम महिला की तुलना में पुरुष ज़्यादा करते हैं ? ऐसे 5-6 उदाहरण दें।

## क्या महिलाएँ योग्य नहीं?

रीता मैडम की कक्षा में तीस बच्चे हैं। उन्होंने अपनी कक्षा में इसी तरह का अभ्यास कराया और परिणाम इस प्रकार रहे –

| काम | पुरुष चित्र | महिला चित्र |
|---|---|---|
| खेती का काम (किसान) | 30 | 0 |
| शिक्षक | 18 | 12 |
| नर्स | 0 | 30 |
| वैज्ञानिक | 25 | 5 |
| दुकानदार | 30 | 0 |
| ईंट भट्ठे पर काम करना | 25 | 5 |
| **कुल** | | |

बच्चों ने चित्रों को अपनी समझ के आधार पर बनाया है। जिसमें शिक्षक के रूप में पुरुषों को, किसान के रूप में भी पुरुषों को, नर्स के रूप में महिलाओं को एवं वैज्ञानिक के रूप में पुरुषों को, दर्शाया। ऐसा उन्हें इसलिए लगता है कि कुछ विशेष कार्य पुरुष ही कर सकते हैं, और कुछ खास तरह के कार्य महिलाएँ ही कर सकती हैं।

उदाहरण के लिए बहुत से लोग यह मानते हैं कि महिलाएँ ही अच्छी तरह से नर्स का काम कर सकती हैं क्योंकि वे अधिक सहनशील और विनम्र होती हैं। इस कार्य को महिलाओं द्वारा किए जाने वाले घरेलू कार्य के साथ जोड़कर देखा जाता है। इसी प्रकार यह धारणा बन गयी है कि लड़कियाँ और महिलाएँ तकनीकी कार्य करने में सक्षम नहीं होती हैं।

**किरण बेदी, भारतीय पुलिस सेवा में प्रथम महिला**

लोग इसी प्रकार की धारणाओं में विश्वास करते हैं। इसलिए बहुत-सी लड़कियों को उनकी योग्यता के अनुरूप अध्ययन करने और प्रशिक्षण लेने का मौका नहीं मिलता है। योग्यता होते हुए भी अधिकांश लड़कियों को स्कूली शिक्षा के बाद विवाह के लिए प्रेरित किया जाता है।

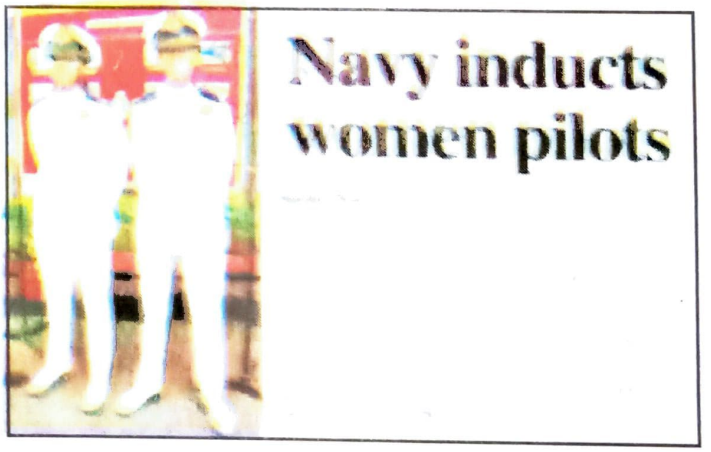


हम मान लेते हैं कि महिलाओं एवं पुरुषों के काम करने की योग्यताएँ अलग-अलग हैं। यह फर्क केवल लड़का या लड़की होने से नहीं आता । यह इन बातों से तय होता है कि हम उनके काम के बारे में कैसे सोचते हैं? उन्हें कैसे मौके मिलते हैं तथा कौन किस काम के लिए कितना योग्य है?

आपके ख्याल से वे काम जिन्हें आमतौर पर पुरुष करते हैं, क्या महिला नहीं कर सकती है? और जो काम आमतौर पर महिलाएँ करती हैं, क्या पुरुष नहीं कर सकते? चर्चा करें। ऐसा बंटवारा क्यों है? इसका उनके जीवन पर किस तरह का प्रभाव पड़ता है?

?

## परिवर्तन के लिए जुनून

### 1. गुड़िया

पढ़ाई का जुनून क्या होता है, इसे साकार किया मो0 असीन इदरीसी की 6 संतानों में सबसे छोटी बेटी गुड़िया ने। उसने देखा कि उसके माता-पिता उसकी पढ़ाई के लिए राजी नहीं हैं। एक दिन वह माता-पिता को घर में बंद कर 13 किमी0 पैदल भागकर उत्प्रेरण केन्द्र नोखा रोहतास चली गयी। उसने वहां अपना नामांकन करा लिया। यह केन्द्र लड़कियों के लिए आवासीय विद्यालय है।उसके इस कदम की सूचना उसके माँ-बाप को 2 दिनों बाद मिली। सूचना मिलने पर उसके पिता, जो पेशे से ड्राइवर हैं, उत्प्रेरण केन्द्र पहुँचे। उन्होंने गुड़िया को वहाँ से वापस घर ले आना चाहा किन्तु गुड़िया वहा से नहीं आना चाहती थी। उसके पिता को अपने समाज की बंदिशों की चिंता थी। किन्तु गुड़िया की जिद्द के आगे उनकी एक न चली। इस तरह गुड़िया के इस कदम से, आस-पास के गाँव में, शिक्षा के प्रति लोगों में एक नए उत्साह का संचार हुआ है।

भारत में 83 प्रतिशत ग्रामीण महिलाएँ खेतों में काम करती हैं। उनके काम में पौधे रोपना, खर-पतवार निकालना, फसल काटना और कटाई करना शामिल हैं। फिर भी जब हम किसान के बारे में सोचते हैं तो हम एक पुरुष के बारे में ही सोचते हैं, ऐसा क्यों ?

?

**शिक्षक के साथ चर्चा करें।**

## 2. पूजा

पूर्णिया जिले के एक गाँव की एक छोटी-सी बच्ची है–पूजा। अपने गाँव की हमउम्र लडकियों को विद्यालय जाते देख उसे भी पढ़ने की इच्छा हुई। घर का सारा काम निपटाकर पूजा चोरी-छिपे एक वर्ष तक लगातार मध्य विद्यालय जाती रही। पूजा ने पुलिस में कार्यरत अपने पिता को समझाने की कोशिश की। अन्ततः पिताजी मान गए। और उसका नाम विद्यालय में लिखवा दिया।

## 3. शाहुबनाथ

शाहुबनाथ 45 साल की एक महिला है। वह पूरे आत्मविश्वास से केरल राज्य परिवहन की एक यात्री बस चलाती है। शाहुबनाथ को गाड़ी चलाने का शौक तो बचपन से ही था, लेकिन उसने कभी नहीं सोचा था कि किसी दिन वह यात्रियों से लदी हुई इतनी भारी भरकम बस चला पाएगी। फिर यह सब हुआ कैसे?

जितना मुश्किल है बस चलाना, उससे कहीं ज्यादा मुश्किल है अधिकारियों को यह यकीन दिलाना कि मैं यह काम भी कर सकती हूँ। कई यात्री तो टिकट खरीदने के बाद भी चालक की सीट पर शाहुबनाथ को बैठे देखकर उतर जाते थे। शाहुबनाथ ने बताया–"एक बार मेरी बस में सिर्फ एक यात्री ने सफर किया। सारे यात्री मुझे देखते ही उतर गए थे। उस दिन मैं बस चलाते-चलाते रोई भी थी। रात का सफर था। दूसरे दिन घर आई तो फूट-फूटकर रोने लगी। बिल्कुल बच्चों की तरह। मेरे पति भी रोने लगे थे। दोनों खूब रोये थे। मैंने कहा, 'मैं नहीं करूँगी अब यह काम।' पति ने कहा ठीक है, "अगर इतनी तकलीफ है तो छोड़ दो, पर मेरी तो इच्छा है तुम वही करो जो आमतौर पर लोग नहीं किया करते।"

मैसूर की के०निनगम्मा भारत की प्रथम महिला बस ड्राइवर

मैं वापस ड्यूटी पर गई। धीरे-धीरे यात्रियों ने मेरी ड्राइविंग की प्रशंसा की। फिर चार से आठ, आठ से सोलह यात्री हुए। अब मैं पूरे आत्मविश्वास के साथ बस चलाती हूँ।

1. गुड़िया और पूजा क्या चाहती थीं और इसे पूरा करने के लिए क्या किया ?
2. अपने आस-पास की कुछ महिलाओं से बात कर के उनके अनुभव लिखो– उन्होंने स्कूल की पढ़ाई कहाँ तक की, किन समस्याओं का सामना करना पड़ा और किस तरह का प्रोत्साहन मिला आदि।
3. शाहुबनाथ को बस चालक बनने के लिए कठिनाइयाँ क्यों आयी ? शिक्षक के साथ चर्चा करें।

?

# महिलाओं के आंदोलन

ऐसे कई क्षेत्र हैं जहाँ महिलाओं की स्थिति में कुछ सुधार दिखता है जैसे कि स्कूली शिक्षा, साक्षरता, वोट देने का अधिकार, कानूनी हक एवं स्वास्थ्य सेवाएँ। यह सुधार काफी हद तक महिलाओं द्वारा आंदोलन छेड़ने की बदौलत हो पाया है।

महिलाओं ने व्यक्तिगत स्तर एवं जन समूह बनाकर इन परिवर्तनों के लिए संघर्ष किया है। विभिन्न तरह के आंदोलनों की झलक यहाँ देखते हैं।

लंबे समय से दहेज के कारण बहुओं को मारा-पीटा और जलाया जा रहा है। महिलाओं ने दहेज के खिलाफ 1980 के दशक में जोरदार आंदोलन छेड़ा। इसमें बड़ी संख्या में महिलाओं ने भाग लिया। खास कर उन औरतों ने जिन्होंने अपनी बहन-बेटी दहेज के कारण खोई थी। महिला समूह ने दहेज पर जगह-जगह नुक्कड़ नाटकों का प्रदर्शन किया, प्रताडित महिलाओं व उनके परिवारों को कानूनी सलाह और मानसिक बल दिया।

महिलाओं ने सड़कों पर उतर कर कचहरी का दरवाजा खटखटाया एवं अपनी माँगों को रखा। आंदोलन की वजह से यह समाज का बड़ा मुद्दा बन गया और समाचार पत्रों में भी खासी बहस हुई। परिणामस्वरूप दहेज कानून बना ताकि वैसे लोगों को दंड दिया जा सके, जो दहेज संबंधित अपराध में संलिप्त है।

**इस जेल को तोड़कर रहेंगे!**

तोड़-तोड़ के बंधनों को,
देखो बहनें आती हैं
ओ देखो लोगों देखो बहनें आती हैं,
आएँगी, जुल्म मिटाएँगी,
वो तो नया जमाना लाएँगी।

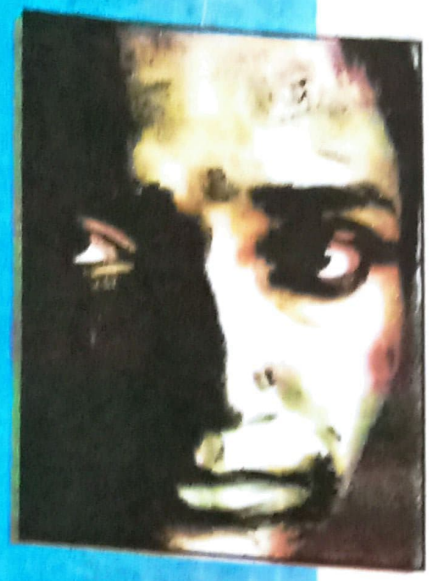

## घरेलू हिंसा के खिलाफ आंदोलन

क्या आपने अपने परिवार या आस-पड़ोस में महिलाओं के साथ मार-पीट, गाली-गलौज और उन्हें छोटी-छोटी बातों पर प्रताड़ित होते देखा है? या फिर सड़क चलते लड़कियों और महिलाओं के साथ छेड़-छाड़ होते देखा है?

घरेलू हिंसा महिलाओं की एक आम और गंभीर समस्या रही है। इसको लेकर महिला समूह लंबे समय से संघर्ष कर रहे हैं। तब जा कर 2006 में घरेलू हिंसा उत्पीड़न कानून पारित हुआ। यह महिलाओं का घर में शारीरिक और मानसिक हिंसा को रोकने हेतु बनाया गया कानून है।

शराब विरोधी आंदोलन

इस चित्र में आपको क्या दिख रहा है?
क्या आपके इलाके में ऐसी समस्या है? ?

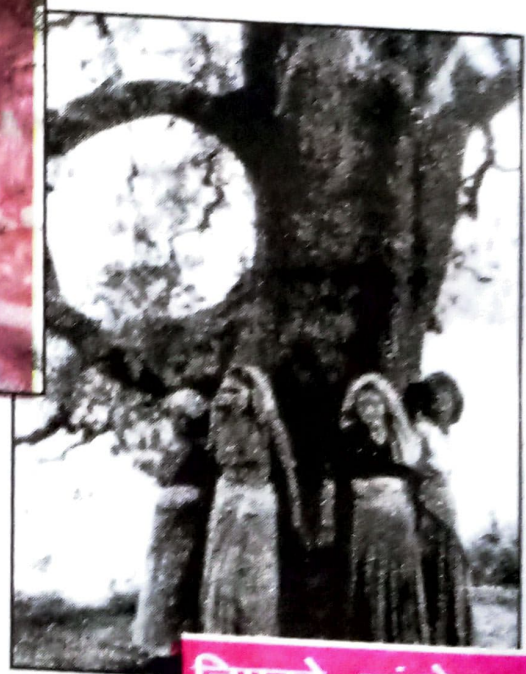

चिपको आंदोलन

यह औरतें ऐसा क्यों कर रही हैं? शिक्षक के साथ चर्चा करें। ?

इस पोस्टर द्वारा क्या कहने की कोशिश की जा रही है? ?

## अभ्यास

1. आपके विचार से महिलाओं के बारे में यह प्रचलित धारणा है कि पुरुषों के समान कार्य नहीं कर सकती है, आपके विचार से यह महिलाओं के अधिकार को कैसे प्रभावित करता है?
2. महिला आंदोलन द्वारा अपनी स्थिति को मजबूत करने के लिए किन्हीं दो प्रयासों का उल्लेख करें।
3. समाज में महिलाओं की स्थिति में सुधार करने के लिए कौन-कौन से कदम उठाये जा सकते हैं? उल्लेख करें।
4. किसी ऐसी महिला की कहानी लिखें, जिसने अपनी इच्छा की पूर्ति के लिए विशेष प्रयास किया हो।